ओ३म्

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(संक्षिप्त रंगीन सचित्र जीवनी)

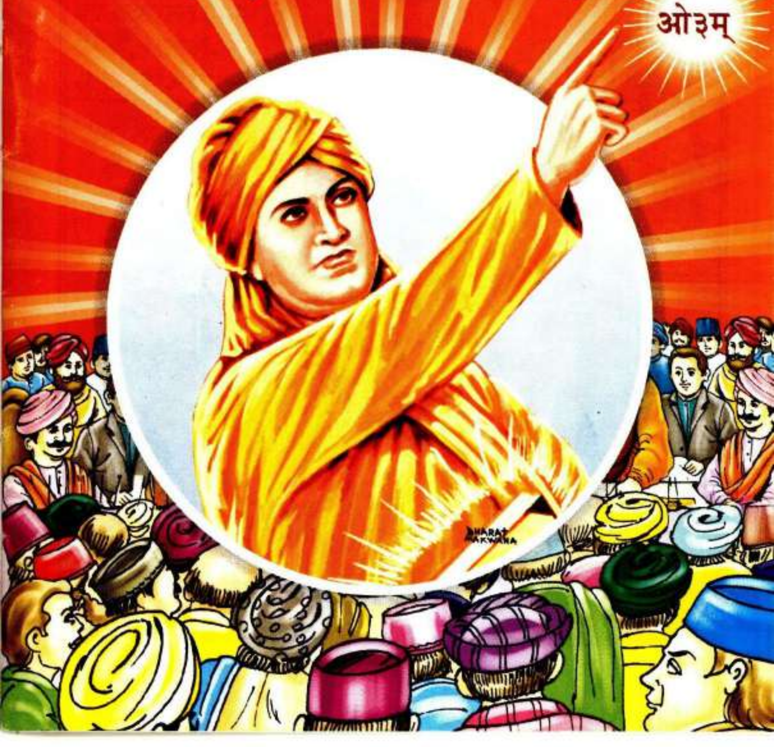

जन्म- सम्वत् 1881 फाल्गुन वदी दसवीं 12 फरवरी 1824 को गुजरात के मौरवी प्रांत के ग्राम टंकारा में कर्षनजी तिवारी जो जन्म से ही औदीच्य ब्राह्मण थे, उनके घर एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया, मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण माता-पिता ने उनका नाम मूलशंकर रखा।

महाशिवरात्रि "बोधरात्रि" बन गई

दो ऐसी घटनाएँ हुई जिसने मूलशंकर की जीवन धारा का रुख बदल दिया। "एक प्यारी बहन की मृत्यु" और दूसरा झटका उन्हें...
"अपने चाचा की असमय मौत का लगा।
इस मृत्यु का रहस्य जानना चाहिए।
फिर एक रात मूलशंकर चुप-चाप सत्य की खोज में घर से निकल-पड़ा... रास्ते में पाखण्डी साधुओं की टोली ने उसे लूटा-
तुम कौन हो- बच्चा, और कहाँ जा रहे हो?
बाबा! मुझे सच्चे ईश्वर की तलाश है, उसी की खोज में निकला हूँ।
हम तुम्हें सच्चे ईश्वर से मिला देंगे, पर तुम्हें इन आभूषणों का त्याग करना होगा।
मूलशंकर ने सारे आभूषण उतार कर साधुओं को सौंप दिये, और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ गये।

ओखी मठ-
सच्चे गुरु की तलाश में एक दिन मूलशंकर 'औखीमठ' पहुँचे। मठाधीश उनका तेजस्वी व्यक्तित्व देख-कर बड़े प्रभावित हुवे। वहाँ ठहर कर मूलशंकर ने देखा कि वेदों के नाम पर ऊल-जलूल ग्रंथ पढ़ाये जा रहे थे।
मूलशंकर! इस मठ के पट्ट शिष्य बन जाओ, मेरे बाद मठ के स्वामी तुम ही बनोगे।
महन्त जी! मेरे घर में धन की कोई कमी नहीं। मैं तो केवल सत्य की खोज में निकला हूँ।
दीक्षा-
स्वामी 'पूर्णानन्द सरस्वती' से दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य (मूलशंकर) स्वामी 'दयानन्द-सरस्वती' कहलाये, फिर बारह वर्ष तक सच्चे गुरु की तलाश में भटकते रहे।
तुम्हारी दीक्षा पूर्ण हुई आज से तुम दया-नन्द सरस्वती के नाम से पहचाने जाओगे।

एक दर्दनाक घटना–

देश में चारों ओर फैली ग़रीबी को देख दयानन्द सरस्वती दुःखी हो उठे।
ये माता अपने मरे बच्चे के शरीर से कफ़न तक उतारे ले रही है। हे ईश्वर! यह कैसी ग़रीबी है?
ईश्वर! तुम इतने अन्यायी नहीं हो सकते, मुझे सत्य की खोज करनी ही पड़ेगी।

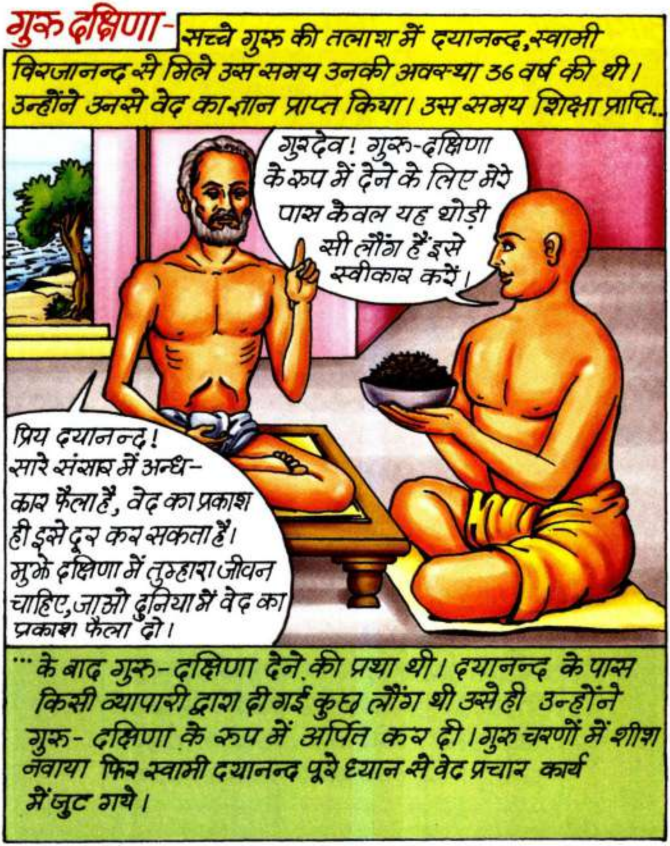
गुरु दक्षिणा-
सच्चे गुरु की तलाश में दयानन्द,स्वामी विरजानन्द से मिले उस समय उनकी अवस्था 36 वर्ष की थी। उन्होंने उनसे वेद का ज्ञान प्राप्त किया। उस समय शिक्षा प्राप्ति..
गुरुदेव! गुरु-दक्षिणा के रूप में देने के लिए मेरे पास केवल यह थोड़ी सी लौंग हैं इसे स्वीकार करें।
प्रिय दयानन्द! सारे संसार में अन्धकार फैला है, वेद का प्रकाश ही इसे दूर कर सकता है। मुझे दक्षिणा में तुम्हारा जीवन चाहिए,जाओ दुनिया में वेद का प्रकाश फैला दो।
...के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। दयानन्द के पास किसी व्यापारी द्वारा दी गई कुछ लौंग थी उसे ही उन्होंने गुरु- दक्षिणा के रूप में अर्पित कर दी। गुरु चरणों में शीश नवाया फिर स्वामी दयानन्द पूरे ध्यान से वेद प्रचार कार्य में जुट गये।

आर्यसमाज की स्थापना–

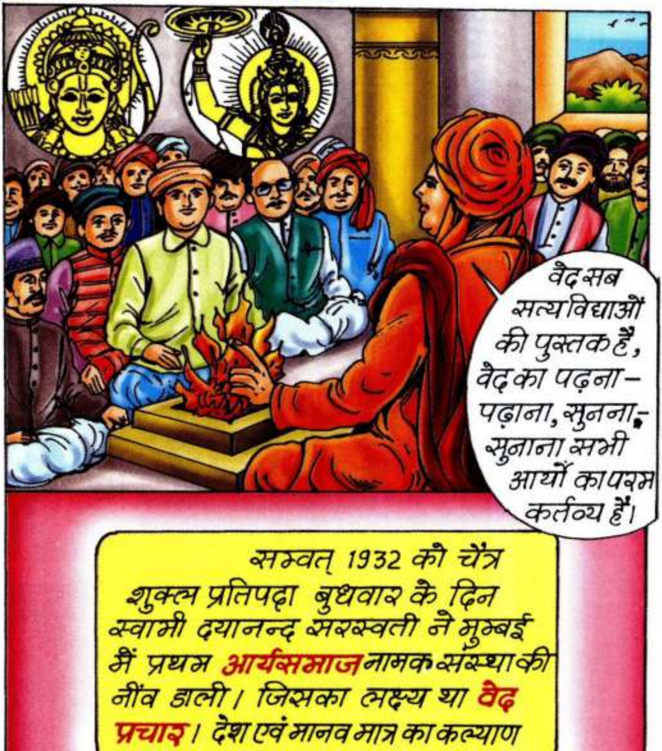

मानव-मानव एक समान

लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया—

ब्रह्मचर्य शक्ति का प्रदर्शन–

जालन्धर के सरदार विक्रम-सिंह ने स्वामीजी से कहाँ कि आप ब्रह्मचर्य से अतुलबल की प्राप्ति की बात करते हैं, पर इसका सबूत क्या है? उस समय स्वामीजी चुप रहे। पर जब विक्रमसिंह अपनी बग्गी में बैठकर जाने लगे, तब उन्होंने बग्गी का एक पहिया अपने हाथ से पकड़ लिया। बग्गी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई तब सरदार विक्रमसिंह को ब्रह्मचर्य के बल का सबूत मिल गया।

स्वराज के आदि मंत्र दाता –

*उसने स्वामीजी पर तलवार से वार करना चाहा पर स्वामीजी ने तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दिये।

जोधपुर गमन-
जोधपुर जाते समय आर्यों ने स्वामीजी से प्रार्थना की-
आपके सत्य उपदेश से महाराज एवं अन्य लोग नाराज़ हो जाऐंगे। आप वहाँ न जाएँ।
यदि लोग हमारी अंगुलियों की बत्तियाँ बना कर जला दें तो भी मैं सत्य ही बोलूँगा।
जोधपुर में-
जब जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।
क्षत्रिय राजा का एक नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?
अंग्रेज़ों व नन्हीं जान की साज़िश से रसोइये ने काँच युक्त दूध में जहर मिला कर स्वामीजी को दे दिया।
इस फ़कीर का मुँह बन्द करना होगा।

हत्यारे को क्षमादान-
स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी से माफ़ी मांगी।
स्वामीजी! मुझे क्षमा कर दीजिए, मैंने बहुत बड़ा पाप किया है, आपके दूध में शीशायुक्त ज़हर मिला दिया था।
ये तूने क्या किया? वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पैसा ले और यहाँ से चला जा नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देंगे।

मृत्युञ्जयी दयानन्द-
अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई॰* को अत्यन्त कष्ट-दायक स्थिति होते हुए भी प्रसन्नचित्त योगमुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त (नास्तिक युवक) का जीवन ही पलट गया। वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं॰ गुरुदत्त विद्यार्थी' कहलाया।

* दीपावली के दिन

'सत्यार्थ प्रकाश' का वैचारिक प्रभाव

उदयपुर में महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना से 'वैचारिक क्रान्ति' का आन्दोलन तेज हो गया। अनेक नौजवान वैदिक धर्म में दीक्षित होकर स्वसंस्कृति, स्वराज्य-संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।

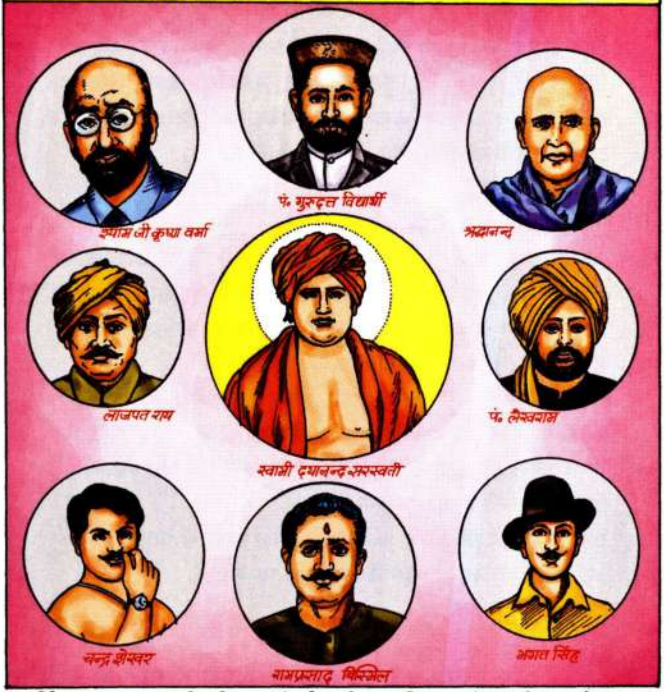

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का संपूर्ण "जीवन चरित्र" एवं उनकी अनमोल रचना "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ने के लिए इस पृष्ठ के पीछे भाग में लिखे पते से सम्पर्क कर सकते हैं।

चित्रांकन
भारत मकवाना

प्रेरणा
महाशय धर्मपाल
(एम.डी.एच.)

सहयोग
चन्द्र मोहन आर्य

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा,अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर,अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

प्रकाशक एवं वितरक
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006
फोन-011-43781191

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड़ नई दिल्ली -1 फोन न. 011-23360150, 233659559
email: aryasabha@yahoo.com website:thearyasamaj.org

मूल्य: ५ रूपये